Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

# मन्नू भंडारी की कहानियों में अभिव्यक्त स्त्री मुक्ति के प्रश्न

डॉ. मनीषा शंखवार
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, लक्ष्मीबाई कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

**शोध सारांश** : मन्नू भंडारी के वे स्त्री पात्र जो स्त्री मुक्ति के प्रश्नों को प्रमुखता से उठाते हैं उनमें 'एक इंच की मुस्कान' की अमला, 'आपका बंटी' की शकुन, 'ऊंचाई' की शिवानी, 'बंद दरवाजों का साथ' की मंजरी, 'त्रिशंकु' की ममी, 'यही सच है' की दीपा, 'रानी मां का चबूतरा' की गुलाबी आदि हैं। वहीं दूसरी ओर 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' की नैना, 'नशा' की आनंदी, 'क्षय' की कुंती, 'सजा' की आशा, 'शायद' की माला, 'घुटन' की मोना और प्रतिभा आदि स्त्री पात्र स्त्री मुक्ति के प्रश्नों से इतर भारतीय समाज की सामान्य महिलाओं के जैसा व्यवहार करती हैं। ये स्त्री पात्र पुरुषवादी समाज के तमाम शोषण और अत्याचार को सहती हैं। वे भारतीय समाज में 'आदर्श स्त्री' की छवि को प्रस्तुत करती हैं।

**मुख्य शब्द** : मन्नू भंडारी, कहानी, अभिव्यक्त, स्त्री, मुक्ति।

आधुनिक साहित्य विमर्श का प्रमुख अंग स्त्री विमर्श है। ऐसा नहीं है कि स्त्रियों की समस्याओं पर केवल आधुनिक समाज में विमर्श हो रहे हैं बल्कि यह विमर्श उतना ही पुराना है जितनी हमारी सभ्यता। अंतर केवल इतना है कि प्राचीन समाज में स्त्री विमर्श को अनदेखा करने का प्रयास किया गया और दबाया गया लेकिन आज यह गंभीर विमर्श के रूप में स्थापित हो गया है। आज इसके नए-नए आयामों पर विमर्श हो रहे हैं। आज स्त्री को मानवता के संदर्भ में देखने और स्थापित करने के लिए विमर्श हो रहे हैं। हमारे समाज में स्त्रियों को पराधीन रखने के प्रयास हमेशा से होते रहे हैं। उन्हें 'पराया धन', 'किसी की अमानत' या 'किसी की धरोहर' मानने की परिपाटी रही है। आधुनिक समाज में स्त्रियों की मुक्ति के प्रश्न प्रमुखता से उठाए जा रहे हैं ताकि व्यापक समाज उसे किसी के अधीन, किसी की अमानत या किसी का धरोहर मानने की भावना से ऊपर उठ सके और स्त्री और पुरुष को समानता के धरातल पर स्थापित किया जा सके। पुरुषवादी समाज में स्त्रियों को पुरुषवादी व्यवस्था के अनुसार सीमित कर दिया गया था। "स्त्रियों के अधिकारों का उसी हद तक समर्थन किया गया, जहां तक पुरुष वर्चस्व पर कोई आंच न आए।"[1] लेकिन आज की स्त्रियां सहजता से अपने अधिकार के प्रश्न खड़ा कर रही हैं। ये सभी प्रश्न मन्नू भंडारी की कहानियों में प्रमुखता से अभिव्यक्त हुए हैं।

मन्नू भंडारी ने स्त्रियों की मुक्ति के प्रश्न को अपनी कई कहानियों का केंद्रीय विषय बनाया है। उनकी 'नशा' कहानी एक पराधीन स्त्री की मुक्ति के प्रश्न को अत्यंत गंभीरता से उठाती है। इस कहानी में मन्नू भंडारी ने भारतीय स्त्री के 'आदर्श रूप' में नायिका आनंदी का चरित्र गढ़ा है जो आत्मनिर्भर है। वह काम करती है और अपना घर चलाती है। वह आत्मनिर्भर है लेकिन पराधीन है। वह समाज द्वारा स्थापित एक 'आदर्श स्त्री' की बेड़ियों में जकड़ी है और अपने निकम्मे पति की

पराधीनता झेल रही है। आनंदी का पति शंकर एक शराबी व्यक्ति है फिर भी आनंदी उसके अत्याचार सहती है। आनंदी का मन अपने पति से जुड़ा हुआ है। यह भारतीय समाज की सोशल कंडीशनिंग का परिणाम है। अपने पति से जुड़ाव भी एक प्रकार का नशा ही है जो आनंदी को शंकर से बांध कर रखता है। उसे मुक्त होने नहीं देता है। यह भारतीय स्त्री की विडंबना है।

मन्नू भंडारी की 'क्षय' कहानी पुरुषवादी समाज में नायिका कुंती की पराधीनता को चित्रित करती है। कुंती एक सचेत एवं अपने आदर्शों पर चलने वाली स्त्री है लेकिन अपने पिता के दबाव में उसे अपने आदर्शों का परित्याग करना पड़ता है। इस कहानी में कुंती मानसिक संवेदना से पीड़ित स्त्री है। वह अपने परिवार में सबसे बड़ी है। उस पर अपने परिवार को संभालने की जिम्मेदारी है। वह कभी-कभी पलायन के बारे में सोचती है लेकिन वह ऐसा कर नहीं पाती। मन्नू भंडारी की 'एखाने आकाश नाई' कहानी की एक स्त्री पात्र सुषमा है। सुषमा भी शिक्षित, कामकाजी और आत्मनिर्भर स्त्री है। वह अपने परिवार को संभालती है। इसके बावजूद वह अपने मन मुताबिक विवाह नहीं कर पाती क्योंकि उसके पिता ऐसा नहीं चाहते हैं। वह आजीवन पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी रहने को विवश है। वह अपने स्वार्थी पिता के बारे में कहती है- "पिछले तीन वर्ष से मैं केवल घर वालों के लिए मर खप रही हूं। नौकरी के साथ दो-दो ट्यूशन करके मैंने घर का सारा खर्च चलाया... पर इन लोगों से इतना भी नहीं होता कि मेरी हंसी-खुशी में साथ दें।"[2] मन्नू भंडारी की एक अन्य कहानी है- 'सजा'। इस कहानी की नायिका आशा के चरित्र द्वारा एक पराधीन स्त्री की पीड़ा को दर्शाया गया है। वह डॉक्टर बनना चाहती है लेकिन घर की नौकरानी बनकर रह जाती है। उसके पिता को सजा हो जाती है जिसके कारण उसे अपने चाचा के अधीन रहना पड़ता है। वह अपने चाचा-चाची को प्रसन्न करने के लिए कॉलेज जाना छोड़ देती है। वह कहती है- "मैं कॉलेज नहीं जाऊंगी। घर का सारा काम मैं करूंगी जिससे चाचा को पूरा आराम मिले और उनका गुस्सा ठंडा रहे। चाची कुछ भी कहेंगी तो चूँ भी नहीं करूंगी। वह प्रसन्न रहेगी तो मुन्नू सुरक्षित रहेगा। मुन्नू को रात में बैठकर पढ़ाया करूंगी।"[3] एक प्रकार से असली सजा तो आशा को मिलती है। एक स्त्री किस प्रकार पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ जाती है यह इस कहानी की मूल संवेदना है।

मन्नू भंडारी ने अपनी कहानी 'खोटे सिक्के' के माध्यम से एक स्त्री की आर्थिक पराधीनता की स्थिति का मार्मिक चित्रण किया है। यहां उच्च वर्ग की पुरुष सत्ता के द्वारा निम्न वर्ग की स्त्री का शोषण किया जाता है। हमारे समाज में प्राय: इस प्रकार की घटनाएं घटती रहती हैं। इन घटनाओं को प्राय: अनदेखा कर दिया जाता है। कोई भी इन घटनाओं का विश्लेषण करने का प्रयास नहीं करता है। मन्नू भंडारी ने इस प्रकार की घटना का 'खोटे सिक्के' कहानी के माध्यम से विश्लेषण किया है। यह कहानी मजदूरों के शोषण और व्यवस्था की क्रूरता को उजागर करती है। यह कहानी हमें यह बताती है कि यह क्रूर व्यवस्था एक स्त्री के लिए कितना अधिक क्रूर हो सकती है। "वैवाहिक जीवन में पति-पत्नी, दोनों को समान रूप से वैयक्तिक स्वतंत्रता होनी चाहिए किंतु पुरुष स्वयं अपनी स्वतंत्रता कायम रखना चाहता है और स्त्री पर प्रतिबंध लगाना चाहता है।"[4] मन्नू भंडारी ने इस तथ्य को चित्रित करते हुए कई कहानियां लिखी हैं। उनकी कहानी 'नई नौकरी' में रमा और कुंदन के माध्यम से इस स्थिति का चित्रण किया गया है। रमा और कुंदन दोनों विवाह से पहले नौकरी करते हैं लेकिन विवाह के बाद कुंदन के दबाव में रमा को अपनी नौकरी छोड़नी पड़ती है। रमा पर घर और बच्चों की सारी जिम्मेदारियां थोप दी जाती हैं। इस कारण रमा कुंठाग्रस्त हो जाती है। वह अपनी इस पराधीन स्थिति के बारे में कहती है- "रमा को लगा जैसे कुंदन उसे

पीछे छोड़कर आगे निकल गया है.... बहुत आगे। जैसे वह अकेली रह गई है।"[5] हमेशा स्त्री को ही त्याग करना पड़ता है। स्त्री को 'त्याग की प्रतिमूर्ति' बनाकर पुरुषों ने उनका खूब शोषण किया है।

'एक कमजोर लड़की की कहानी' की नायिका रूप एक आधुनिक स्त्री है लेकिन वह चाहकर भी रूढ़िग्रस्त एवं जड़ संस्कारों के बंधन को तोड़ नहीं पाती है। इस कारण वह आजीवन पराधीन रहती है। पुरुष समाज किसी स्त्री की पराधीनता को उसका गुण बताते हुए प्रशंसा करता है। पुरुषों को स्वतंत्र स्त्रियां बुरी लगती हैं। रूप का पति उसके पराधीनता को उसका गुण बताते हुए कहता है- "मैंने तो साफ कह दिया, पढ़ी-लिखी है तो सिर पर बिठाओ! पढ़ी-लिखी है, पढ़ी-लिखी है! अरे पढ़ी-लिखी तो तुम भी हो, भागने की बात तो दूर रही; दो साल हो गए, मुझे कभी याद नहीं पड़ता कि तुमने आंख उठाकर किसी पुरुष से कभी बात भी की हो। यह भी कोई बात हुई भला।"[6] इसी तरह की प्रशंसा कर पुरुषवादी सत्ता स्त्रियों को कमजोर बना देती है और पराधीनता को ही उसका गुण बना देती है। 'हार' कहानी का विषय भी इसी प्रकार का है। इस कहानी में दीपा और शेखर पति-पत्नी हैं। वे दोनों दो अलग-अलग राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता हैं। चुनाव के समय दोनों अपने-अपने दल के लिए काम करते हैं लेकिन शेखर को यह बात अच्छी नहीं लगती। वह दीपा को प्रताड़ित करता है। इस कारण दीपा मानसिक रूप से खुद को उपेक्षित महसूस करती है और अंत में अपनी पराधीनता को चुन लेती है। वह अपना वोट भी अपने पति के राजनीतिक दल को दे देती है। इस प्रकार पुरुषवादी समाज में एक स्त्री हार जाती है और पुरूष जीत जाता है।

मन्नू भंडारी की कहानी 'बंद दरवाज़ों का साथ' स्त्रियों की पराधीनता की पीड़ा को भिन्न रूप में चित्रित करती है। इस कहानी की नायिका मंजरी का विवाह विपिन से होता है। इन दोनों का वैवाहिक जीवन अच्छे से व्यतीत हो रहा होता है कि मंजरी को विपिन की दूसरी पत्नी और बच्चे के बारे में पता चलता है। वह विपिन से अलग होना चाहती है लेकिन वह ऐसा नहीं कर पाती है। हमारे समाज में स्त्री को स्वयं निर्णय लेना कितना कठिन है यह इस कहानी से पता चलता है। पराधीन बने रहना एक स्त्री की नियति है। मंजरी कहती भी है- "वह खुद जानती है कि औरतें कभी पूरी तरह तटस्थ नहीं रह सकतीं, खासकर ऐसे सांघातिक क्षणों में तो वे बात भी नहीं कर सकती, केवल रो सकती हैं, झर-झर रो सकती है।"[7] एक स्त्री स्वयं सही होती है लेकिन पति के गलत निर्णयों के समक्ष समर्पण कर देती है। इस कारण आजीवन पराधीन रहती है। मन्नू भंडारी ने पुरुषवादी समाज में स्त्री की पराधीनता की स्थिति का मार्मिक चित्रण किया है जिसमें उसे आंसू बहाने पड़ते हैं और ये आंसू ही उसे पुरूष के समक्ष कमजोर सिद्ध कर देते हैं। 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' एक आदर्शवादी पवित्रता स्त्री के पराधीन जीवन की कहानी है। एक स्त्री जो अपने बीमार पति की सेवा में खुद को समर्पित कर देती है इसके बावजूद उसका पति उस पर अत्याचार करता है। नायिका के शंकालु पति को यह लगता है कि वह किसी पराए पुरुष की ओर आकर्षित है। इस कारण वह उसे घर से निकालना चाहता है। नायिका सबकुछ सहती है लेकिन घर नहीं छोड़ती है। उसकी सोशल कंडीशनिंग इस तरह से हुई है कि वह पति को परमेश्वर ही मानती है। वह उसे छोड़कर जाने के बारे में सोच भी नहीं पाती है। वह अपनी पराधीनता का प्रमाण देते हुए कहती है- "फिर भी जाने क्यों, मुझे न अपने किए का दुख है, न इस दंड का! इस सबके बाद मैं स्वयं ही घर छोड़कर निकल जाती।.... पर इनका क्या होगा?"[8] एक स्त्री स्वयं के दु:ख के बारे में न सोचकर दूसरे के दु:ख की चिंता करती है चाहे वह उसका शोषण करने वाला पति ही क्यों न हो। यह स्त्री जीवन की विडंबना है। वह पति, बच्चे, परिवार, समाज की चिंता करती है शायद इसलिए वह स्वतंत्रचेता मनुष्य नहीं बन पाती है।

प्रभा खेतान ने लिखा है कि– "अतीत में स्त्री ने कभी विरोध की भाषा नहीं सीखी थी वहीं आज स्त्री प्रतिरोध की भाषा भी पूर्णत: जानती है। वह जानती है कि स्त्री समस्या को वृहत्तर सामाजिक संरचनाओं से जोड़ पाएगी और नए संदर्भों में समझ पाएगी। वह जानती है कि समाज में शोषण और दमन कई स्तरों पर होता है। हम और आप इस प्रकार की अकेली स्त्रियां नहीं हैं, जिन्हें समाज में शोषित होना पड़ा। हमारी और भी जातियां हैं, उपराष्ट्रीयताएँ हैं, जो सामूहिक शोषण की शिकार हैं। इन शोषणकारी संरचनाओं के खिलाफ होने वाले संघर्ष से जुड़े बिना स्त्री का संघर्ष कभी भी आगे नहीं बढ़ सकता।"[9] आज की स्त्री आंशिक रूप से आत्मनिर्भर हुई है जिसके कारण उसके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की भावना जागृत हुई है। वह रूढ़ियों का विरोध कर रही है साथ ही शोषणकारी संरचनाओं के खिलाफ खड़ी हो रही हैं। मन्नू भंडारी की कहानियों में चित्रित स्त्रियां भी अपने परिवेश के अनुकूल संक्रमण की स्थिति से गुजर रही हैं। वे अपने जीवन में सभी स्तरों पर संघर्ष करती हैं और स्त्री मुक्ति के प्रश्न को उठाती हैं।

मन्नू भंडारी के वे स्त्री पात्र जो स्त्री मुक्ति के प्रश्नों को प्रमुखता से उठाते हैं उनमें 'एक इंच की मुस्कान' की अमला, 'आपका बंटी' की शकुन, 'ऊंचाई' की शिवानी, 'बंद दरवाजों का साथ' की मंजरी, 'त्रिशंकु' की ममी, 'यही सच है' की दीपा, 'रानी मां का चबूतरा' की गुलाबी आदि हैं। वहीं दूसरी ओर 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' की नैना, 'नशा' की आनंदी, 'क्षय' की कुंती, 'सजा' की आशा, 'शायद' की माला, 'घुटन' की मोना और प्रतिभा आदि स्त्री पात्र स्त्री मुक्ति के प्रश्नों से इतर भारतीय समाज की सामान्य महिलाओं के जैसा व्यवहार करती हैं। ये स्त्री पात्र पुरुषवादी समाज के तमाम शोषण और अत्याचार को सहती हैं। वे भारतीय समाज में 'आदर्श स्त्री' की छवि को प्रस्तुत करती हैं। हम देखते हैं कि मन्नू भंडारी की कहानियों में चित्रित स्त्रियां एक ओर पुरुषवादी समाज में स्त्री मुक्ति के प्रश्नों को न केवल उठाती हैं बल्कि मुखर भी हैं तो दूसरी ओर कुछ स्त्री पात्र उसी व्यवस्था में जीने को अभिशप्त हैं। 'एक कमजोर लड़की की कहानी' में मन्नू भंडारी ने एक ऐसी स्त्री का चित्रण किया है जो प्रेम तो किसी और से करती है लेकिन परंपराओं से भी बंधी है इसलिए पति से प्रताड़ित होती है। वह आधुनिक है लेकिन प्रेम विवाह का निर्णय नहीं ले पाती और पिता की पसंद के लड़के से विवाह करती है। विवाह के बाद जब वह अपने प्रेमी से मिलती है तो उसके अंदर का प्रेम तो जग जाता है लेकिन पत्नीव्रत का संस्कार उसे पीछे खिंचता है। उसका प्रेमी कहता है– "तू अपनी बात पर टिकती क्यों नहीं। विरोध तो बड़े जोर–शोर से करेगी, दुनिया भर की अकड़ दिखाएगी पर करेगी वही जो दूसरे चाहते हैं।"[10] मन्नू भंडारी की कई कहानियां ऐसी ही 'आदर्श स्त्री' के जीवन पर केंद्रित है जो परंपरा, संस्कार आदि मूल्यों से संचालित होती है और वे अपना निर्णय स्वयं नहीं ले पाती हैं।

संदर्भ सूची–


1. राजेन्द्र यादव, आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ 26, 2007
2. मन्नू भंडारी, मेरी प्रिय कहानियां, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, पृष्ठ 57, 1979
3. संपादक, अर्चना वर्मा, मन्नू भंडारी की श्रेष्ठ कहानियां, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, पृष्ठ 158, 2004
4. संपादक, श्रीराम शर्मा, समकालीन हिंदी साहित्य: विविध विमर्श, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 129, 2009
5. मन्नू भंडारी, कहानी संग्रह: एक प्लेट सैलाब, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 10, 2011

6. मन्नू भंडारी, कहानी संग्रह: मैं हार गई, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 79, 2011
7. मन्नू भंडारी, कहानी संग्रह: एक प्लेट सैलाब, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 26, 2011
8. मन्नू भंडारी, कहानी संग्रह: तीन निगाहों की एक तस्वीर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 23, 2011
9. हंस, हिंदी मासिक पत्रिका, सितंबर 2000, पृष्ठ 17
10. मन्नू भंडारी, कहानी संग्रह: मैं हार गई, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 51, 2011